JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

जनार्दन सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर ,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन,लखनऊ

प्रस्तुत शोधकार्य में व्यावसायिक वर्ग (बी0 एड0) के 50 छात्रों तथा अव्यावसायिक वर्ग (बी0 ए0) के 50 छात्रों में मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसमें आर0 के0 ओझा तथा महे"ा भार्गव द्वारा निर्मित study of values test (SVT) उपकरण का प्रयोग किया गया। इस शोध के परिणामस्वरूप यह पाया गया कि व्यावसायिक व अव्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सैद्धान्तिक मूल्य सौन्दर्य मूल्य सामाजिक मूल्य तथा राजनैतिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दोनो वर्गों के विद्यार्थियो के आर्थिक मूल्य के मध्य सार्थक अन्तर है तथा धार्मिक मूल्य के मध्य थोडा अन्तर है परन्तु यह सार्थक अन्तर नही है।

प्रस्तावना–

डा0 राधाकृष्णन ने कहा है, " एक सभ्यता का निर्माण ईट, सीमेंट , लौह या म"ाीनों द्वारा नही होता बल्कि इसका निर्माण व्यक्तियों द्वारा उनके गुणों तथा चरित्र द्वारा होता है।"

f"ाक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो बच्चों में अन्तर्निहित योग्यताओं को बाहर निकालती है। f"ाक्षा को बालक में सम्भावित आत्मा,"ारीर तथा बुद्धि का सर्वांगीण विकास करना चाहिये। f"ाक्षा को बालक को इस योग्य बनाना चाहिये कि वह समाज का सभ्य नागरिक बन सके तथा समाज व अपने माता–पिता की सेवा कर सके। परन्तु दुर्भाग्यव"ा वर्तमान f"ाक्षा बालक को केवल सूचनायें प्रदान कर रही है। भारत में इन दिनों f"ाक्षा का अर्थ ऐसे बालकों के निर्माण से है जो कि उन्हे व्यवसाय प्राप्त करा सके और अधिकतम धन, ऐ"ाोआराम और अच्छी जीवन शैली उपलब्ध कराने में समक्ष हो।

वि"वविद्यालय f"ाक्षा आयोग 1948 की समिति ने यह पाया कि लोगों के ह्रदय से धीरे–धीरे धर्म के आधारभूत सिद्धान्तों के अदृ"य होने के प्रमुख कारण बहुत सी बुराइयाँ हैं जो कि हमारी f"ाक्षा व्यवस्था पर कलंक के समान हैं और अन्ततः हमारे समाज को पंगु बना रही हैं। इसका एकमात्र उपचार अपने बच्चो में प्रारम्भिक अवस्था में ही नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का विकास करना है अर्थात प्राथमिक f"ाक्षा से ही इन मूल्यों के विकास पर ध्यान दिया जाये।

NCF(2005) के अनुसार मूल्य विकास का मतलब इस प्रकार के आदे"ा देना नही है कि यह करोः और यह न करो। बच्चे जो भी सुनते हैं उनमें से अधिकतर चीजों को समझ पाते हैं, लेकिन अक्सर कथनी और करनी में अन्तर होता है और वे उस विराधाभास से सामन्जस्य नही बिठा पाते। मूल्यों की f"ाक्षा का मतलब हमे"ाा से वांछनीय व्यवहार को प्रेरित करना रहा है। इसका अर्थ अस्वीकृत और अवांछनीय व्यवहार और भावनाओ का दमन और खण्डन भी रहा है। विद्यार्थी अक्सर बिना किसी प्रतिबद्धता के अपनी सही भावना व विचार को छिपाकर बस जुबानी तौर पर नैतिक मूल्यों की बात करने लगते हैं। अतः जरूरत बातचीत से हटकर अनुभवों और चिन्तन मनन तक जाने की है। f"ाक्षक खुद सुविचारित प्रयास कर सकते हैं कि पाठ्य सामग्री और बच्चों के विकास के स्तर के अनुरूप शान्ति से सम्बन्धित मूल्यों को पठन–पाठन मे शामिल कर लें और उन पर लगातार बल दें। नैतिक f"ाक्षा और आचरण व्यक्तिगत, सामाजिक, सामुदायिक और वै"वक आयामों से जोड़कर सिखाये जा सकते हैं।

सन 1970 में NCERT ने न्यूनतम् पाठ्यक्रम स्तर के निर्धारण के लिये एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। यहाँ पर सदस्यों ने नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों जैसे सहन"ालता, ईमानदारी, सहानुभूति, दान"ालता, प्रेम इत्यादि की आव"यकता पर बल दिया। इसी वर्ष

NCERT द्वारा व्यवसाय आधारित ि"ाक्षा पर एक दूसरे सम्मेलन का आयोजन किया गया जहॉ पर ि"ाक्षा सुधार के लिये गॉधीवादी मूल्यों पर जोर दिया गया। सम्मेलन ने प्राथमिक स्तर की ि"ाक्षा मे निम्न गांधीवादी मूल्यो की सिफारि"ा की –

सेवा, शान्ति, अहिंसा, शुद्धता, निर्भीकता, परिश्रम की प्रतिष्ठा, दूसरे धर्म के प्रति सम्मान, सामाजिक जागरूकता एवं उत्तरदायित्व की भावना।

राश्ट्रीय ि"ाक्षा नीति 1986 ने समाज में तथा वि"ोष रूप से नौजवानों मे बढती अपराधवृत्ति तथा मूल्यों के पतन पर अपने विचार व्यक्त किये। इसका आयोजन पाठ्यक्रम के पुनर्गठन की आव"यकता को ध्यान में रखकर किया गया। ताकि ि"ाक्षा को सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों की उपज में कारगर यन्त्र के रूप मे प्रयोग किया जा सके। हमारे सांस्कृतिक समाज में ि"ाक्षा को व्यक्तियो में आन्तरिक मूल्य एकता तथा अखण्डता के सार्वभौमिक और आन्तरिक मूल्यो को पालना चाहिये। इस प्रकार की मूल्य–परक ि"ाक्षा को अस्पष्टता, धार्मिक उन्माद, हिंसा, अन्धवि"वास, भाग्यवाद को लोगो के भीतर से निकाल बाहर करना चाहिये।

आव"यकता एंव महत्व–

आधनिक युग में मूल्य पतन सारे संसार की समस्या है। तीव्र गति से हुई वैज्ञानिक प्रगति तथा आद्योगिकीकरण के प्रभाव ने हमारे युगों पुराने नैतिक स्तर को पीछे ढकेल दिया है। मूल्यहीनता के इस वातावरण ने लोगों की एकता को खण्डित कर दिया है और हमारा समाज टुकडों में विभाजित हो रहा है। क्षुद्र स्वार्थों की पूर्ति हेतु क्षेत्रवाद, भाषावाद, जातिवाद तथा सम्प्रदायवाद जैसे विवादों को बढावा देकर राष्ट्रीयता के भाव को भी कुंठित किया जा रहा है। इस बिखराव को रोकने के लिये एक साथ उठ खडे होने तथा ईमानदारी से प्रयत्न करने का सही समय आ गया है। ताकि हम इस चलन को बदल कर सही दि"ाा में आगे बढ सकें। इस पतन को रोकने का प्रमुख साधन मूल्य परक ि"ाक्षा हो सकती है।

भाोधकार्य के उद्दे"य–

1– व्यावसायिक पाठयक्रम में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

2– अव्यावसायिक पाठयक्रम में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

3–व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक पाठयक्रम में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

भाून्य परिकल्पना–"व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक पाठयक्रम में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

भाोध विधि– प्रस्तुत शोधकार्य हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्याद"र्ा– प्रस्तुत शोध कार्य में उत्तर प्रदे"ा राज्य के बॉदा जनपद के एकलव्य महाविद्यालय दुरेडी के बी0 एड0 के 50 छात्रो तथा पं0 जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय के बी0 ए0 के 50 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण एंव तकनीक– आर0 के0 ओझा तथा महे"ा भार्गव द्वारा निर्मित study of values test (SVT).

सांख्यकीय विधि– प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता द्वारा प्रदत्तों के वि"लेषण एंव परिकल्पना के परीक्षण के लिये मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा जेड परीक्षण का प्रयोग किया गया।

आँकडों का वि"लेशण एंव व्याख्या– उद्दे"य– प्रस्तुत शोध कार्य का उद्दे"य व्यावसायिक (B.Ed) एंव अव्यावसायिक (B.A.) वर्ग के छात्रो के 6 मूल्यों–सैद्धान्तिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, सौन्दर्य मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

गणना तालिका – B.Ed

मूल्य	सैद्धान्तिक मूल्य	आर्थिक मूल्य	सौन्दर्य मूल्य	सामाजिक मूल्य	राजनीतिक मूल्य	धार्मिक मूल्य
मध्यमान	44.16	37.48	29.26	47.02	44.54	37.78
प्रमाणिक विचलन	12.24	4.54	7.88	4.01	5.58	3.43

गणना तालिका – **B.A**

मूल्य	सैद्धान्तिक मूल्य	आर्थिक मूल्य	सौन्दर्य मूल्य	सामाजिक मूल्य	राजनीतिक मूल्य	धार्मिक मूल्य
मध्यमान	43.64	44.28	30.48	42.7	43.72	35.18
प्रमाणिक विचलन	3.87	6.95	7.03	4.47	2.39	6.76

निश्कर्श–

वर्णित परिकल्पनाओं के आधार पर निरूपित निष्कर्षों का सुव्यवस्थित वर्णन निम्न प्रकार है–

- व्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों में मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का सबसे अधिक मध्यमान सामाजिक मूल्य में तथा सबसे कम सौन्दर्यमूल्य में पाया गया है।
- अव्यवसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत छात्रों में मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का सबसे अधिक मध्यमान आर्थिक मूल्य तथा सबसे कम मान सौन्दर्यमूल्य में पाया गया है।
- व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सैद्धान्तिक मूल्य के मध्य सार्थक अन्तर नही है।
- व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य के मध्य सार्थक अन्तर है।
- व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सौन्दर्य मूल्य के मध्य सार्थक अन्तर नही है।
- व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।
- व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के राजनैतिक मूल्य के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।
- व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य में .05 स्तर पर थोडा अन्तर तो है परन्तु यह अन्तर सार्थक नही है।

व्यावसायिक तथा अव्यावसायिक पाठयक्रम में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के सैद्धान्तिक मूल्य सौन्दर्य मूल्य, सामाजिक मूल्य तथा राजनैतिक मूल्यों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है। धार्मिक मूल्य में .05 स्तर पर थोडा अन्तर अव"य है परन्तु यह सार्थक अन्तर नही है। दोनो वर्गों के छात्रों के आर्थिक मूल्य के मध्य सार्थक अन्तर है।

भौक्षिक महत्व :–

अनुसंधान करने के प"चात जब तक उसके परिणामों को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत नही किया जाता तब तक अनुसंधान की उपादेयता सीमित ही रहती है। जब तक अनुसंधान की प्रासंगिकता सार्थक नही होती तब तक वह समाज के लिए उपयोंगी नही हो सकता। इसके लिए यह जानने का प्रयास किया जाता है कि अनुसंधान के परिणामों के शैक्षिक निहितार्थ क्या हैं जिससे शोध कार्य का महत्व स्पष्ट हो सके तथा शोध कार्य को समाजोपयोगी बनाया जा सकें। प्रस्तुत शोध कार्य के शैक्षिक निहितार्थ निम्न हैं –

- मूल्य मानव व्यवहार को निर्दे"ात करते हैं अतः इसके लिए यह आव"यक है कि बालकों को प्राथमिक, माध्यामिक तथा उच्च स्तर पर मूल्यों का उचित ज्ञान कराया जाए।
- मूल्य पतन की प्रक्रिया को रोकने के लिए पाठ्यक्रम में मूल्य f"ाक्षा को प्रमुख स्थान दिया जाना चाहिए। इसके लिए अलग से मूल्य f"ाक्षा के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करने की आव"यकता नही है वरन पाठ्यक्रम को ही इस प्रकार संचालित किया जाना चाहिए कि छात्रों में मूल्यों का विकास सम्भव हो सके।
- मूल्य f"ाक्षा के लिए f"ाक्षकों को सच्चरित्र प्रयत्न करना चाहिए। छात्रों को खेल–कूद तथा ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों आदि पाठ्यसहगामी क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे उनमें मूल्यों का उचित विकास हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- Bhardwaj I, (2005) value-Oriented education, Journal of value education, vol-5, no-1-2, p-58
- Chaudhary. Kamlesh Kumar,. "इक्कीसवीं शताब्दी में मूल्य ि"क्षा", भारतीय आधुनिक ि"क्षा, 2000, vol-2,p-16
- Dr. Bhatnagar. R.P, "ि"क्षा अनुसंधान", 2008, p-99.
- Dr. Gupta. S. P, "आधुनिक मापन मूल्यांकन," 2008, p-408.
- Dr. Gupta. S. P, Dr. Gupta Alka,. "उच्चतर ि"क्षा मनोविज्ञान," 2008, p-485.
- Kaur, Perminder, Suta, Ravi, Value crisis education as a silver lining, Edutracks, 2007, vol-6, p-16.
- Kunchithapadam, seethe. (2005), Need for value-based spiritual education in schools, journal of value education. Vol-5, no-1-2, p-69
- Lodha. Jitender Kumar,. "अध्यापक ि"क्षा के पाठ्यक्रम में मूल्यपरक ि"क्षा का स्वरूप", भारतीय आधुनिक ि"क्षा, 2004, vol-3 ,p-22
- Mangal S.K,. "ि"क्षा मनोविज्ञान," 2008, p-693.
- Merlin. Shasikala, J.E., Ravichandran T, Value oriented school education, Edutracks, 2007, vol-6, no-6, p-14.
- Nakra, Chitra (2005), comprehensive and futuristic value based programme, journal of value education, vol-5, no-1-2, p-82.
- Pramila. A, Value Education a true perspective, Edutracks, 2007, vol-8, no-1, p-13.
- Rai. Parasnath, "अनुसंधान परिचय", 2008, p-285.
- Saxena. N. R. Swaroop, "ि"क्षा के दा"र्निक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त", 2008, p-600.
- Singh, S.N., Singh N, Behavioral scientist 2005, vol-6, no-1, p-49.
- Siddiaui, M Aktar (2004): Teacher and value education, Anwaeshika Indian Journal of teacher education vol-1, no-2, p-56,
- Singh. Ajit, Jha, Brijbhushan, "मानव मूल्य एवं सदाचार," भारतीय आधुनिक ि"क्षा, 2000, vol-1, p-26